पत्र व्यवहार नीचे लिखे पते से करें और अपना ठिकाना (पता) नागरी (हिन्दी) अंग्रेजी दोनों अक्षरोंमें साफ साफ पूरा लिखे, ग्रामका नाम पोस्टआफिस तथा जिला अंग्रेजीमें साफ हर्फोंमें लिखे और डाक खर्चके लिये टिकिट पहला भेजे ।

इस पुस्तकमें कोई शब्द काना मात्र आदि दृष्टि दोष से अशुद्ध रह गया हो या सूत्रसे विपरीति आ गया हो तो सज्जन सुधारकर वाचे और हमें सूचना करे, जो कि आई दे शुद्ध छपे ।

अगरचन्द भैरोदान सेठिया
"जैन ग्रन्थालय"
बीकानेर (राजपूताना)

सेठिया जैन ग्रन्थालय पुस्तक नं० २३

श्रीवीतरागाय नमः

अथ

लघुदण्डक का थोकड़ा

संग्रह कर्त्ता—

धर्मचन्द्रजी तत्पुत्र भैरोदानजी

तत्पुत्र जेठमल सेठिया

बीकानेर निवासी

BHAIRODAN JETHMULL SETHIA,

Moholla Maroriana,

Bikaner Rajputana

J B Ry

मूल्य ज्ञान वृद्धि

प्रति १०००

वीर सम्वत् २४४९

विक्रम सम्वत् १९७९

ई० सन् १९२३

अथ चोवीश दंडक रा नाम—

गाथा—नेरइआ असुराइ, पुढवाई बेइंदियायओ चेव ।
गब्भयतिरिय मणुस्सा, वंतर जोइसिय वेमाणी ॥ १ ॥

अर्थ—नेरइया—नारकी सातका एक दंडक ।

कलकत्ता।

२०१ हरिसन रोड के 'नरसिंह प्रेस' में

मैनेजर पण्डित काशीनाथ जैन

द्वारा मुद्रित।

अथ चोवीश दडक रा नाम—

गाथा—नेरइआ असुराई, पुढवाई वइदियायओ अव ।
गब्भयतिरिय मणुस्सा, वतर जोइसिय वैमाणी ॥ १ ॥

अर्थ—नेरइया-नारकी सातका एक दडक ।

असुराई-असुरकुमारादिक दश भुवनपति का दश दण्डक। पुढवाई—पृथ्वीकायादि पांच स्थावर का पाच दण्डक। बेइन्दियायओ-बेइंद्रियादिक तीन विकलेन्द्रिय का तीन दण्डक। गब्भयतिरियमणुस्सा—गर्भज तिर्यंच का एक दण्डक, तथा गर्भज मनुष्य का एक दडक। वतर—व्यन्तर देव, वाणव्यन्तर देवका एक दण्डक। जोइसिय—ज्योतिषी पाच देवताका एक दण्डक। वेमाणी—वैमानिक देवताका एक दण्डक। ए चोवीस दण्डक हुए॥

चोवीस दण्डक पर शरीरादि छव्वीस द्वार चाले उसका स्वरूप कहते हैं—

१ शरीर—शरीर पाच।

२ अवगाहना—जघन्य अगुल के असख्यात में भाग, उत्कृष्टी १००० योजन जाजेरी, उत्तर वैक्रिय करे तो जघन्य आगलरे असख्यातमें भाग उत्कृष्टि एक लाख योजन जाजेरी।

सघयण—सघयण किसको कहते है ? जिस र्मके उदय सेँ हाडोका बंधन हो उसको संघयण कहते हे , उसके भेद छव—

१ वज्रऋषभनाराच—जिसके उदयसे वज्रके हाड, वज्रके वेठन और वज्रकी कीलियां हो। २ ऋषभनाराच—जिसके उदयसे वज्र के हाड और वज्रकी कीली हो।

३ नाराच—जिसके उदय से वेठन और कीली सहित हाड हो।

४ अर्ध नाराच—जिसके उदय से हाडोकी सधि अर्ध कीलित हो।

५ कीलक (कीलिका)—जिसके उदयसे हाड परस्पर कीलित हो।

६ असप्राप्ता स्रूपाटिका (छेवटु)—जिसके उदयसे जुदे २ हाड नसोसे वधे हो-परस्पर कीले हुवे न हो।

४ संठाण—सस्थान किसको कहते हैं ? जिस

कर्मके उदय से शरीर की आकृति (शकल) बने उसको सस्थान कहते हैं। उसके भेद छव —

१ समचतुरस्र (समचोरस)—जिसके उदय से शरीर की शकल ऊपर नीचे तथा बीचमें सम भागसे बने।

२ न्यग्रोध परिमण्डल—जिसके उदय से जीवका शरीर वड़के वृक्ष की तरह हो अर्थात् जिसके नाभिसे नीचेके अङ्ग छोटे और ऊपर के वड़े हो।

३ स्वाति (सादि)—ऊपर वाले जवावसे विलकुल विपरीत हो, जैसे साँप की वॉमी।

४ कुब्जक (कुवडो)—जिसके उदय से कुवड़ा शरीर हो।

५ वामन (वावनो)—जिसके उदयसे बौना (वायना) शरीर हो।

६ हुण्डक—जिसके उदयसे शरीरके अङ्गो--पाग किसी खास शकलके न हो (खराव हो)।

५ कषाय--कषाय च्यार--क्रोध, मान, माया, लोभ।

६ सज्ञा—सज्ञाच्यार—आहार सज्ञा, भय सज्ञा मैथुन सज्ञा, परिग्रह सज्ञा।

७ लेश्या—लेश्या छव।

८ इन्द्रिय—इन्द्रिय पाच

९ समुद्घात—समुद्घात किसको कहते है? मूल शरीर को विना छोड़े जीवके प्रदेशो के वहार निकलने को समुद्घात कहते है, जिसका भेद ७ है—

१ वेदनीय, २ कषाय, ३ मरणान्तिक, ४ वैक्रिय, ५ तेजस, ६ आहारिक, ७ केवली।

१० सन्नी—मन होयसो सन्नी, मन नहीं होय सो असन्नी।

११ वेद—वेद तीन—पुरुष वेद, स्त्री वेद, नपुंसक वेद।

२ पर्या[illegible]ति—पर्याय छव।

[illegible]ष्टि तीन।

कर्मके उदय से शरीर की आकृति (शकल) बने उसको सस्थान कहते हैं। उसके भेद छव —

१ समचतुरस्र (समचोरस)—जिसके उदय से शरीर की शकल ऊपर नीचे तथा बीचमें सम भागसे बने।

२ न्यग्रोध परिमण्डल—जिसके उदय से जीवका शरीर बड़के वृक्ष की तरह हो अर्थात् जिसके नाभिसे नीचेके अङ्ग छोटे और ऊपर के बड़े हो।

३ स्वाति (सादि)—ऊपर वाले जवावसे बिलकुल विपरीत हो, जैसे साँप की बॉमी।

४ कुब्जक (कुबडो)—जिसके उदय से कुबड़ा शरीर हो।

५ वामन (बावनो)—जिसके उदयसे बौना (बायना) शरीर हो।

६ हुण्डक—जिसके उदयसे शरीरके अङ्गो-पाग किसी खास शकलके न हो (खराब हो)।

५ कषाय--कषाय च्यार--क्रोध, मान, माया, लोभ।
६ सज्ञा—सज्ञाच्यार—आहार सज्ञा, भय सज्ञा, मैथुन सज्ञा, परिग्रह सज्ञा।
७ लेश्या—लेश्या छव।
८ इन्द्रिय—इन्द्रिय पाच
९ समुद्घात—समुद्घात किसको कहते हैं? मूल शरीर को विना छोड़े जीवके प्रदेशो के वहार निकलने को समुद्घात कहते हैं, जिसका भेद ७ है—

१ वेदनीय, २ कषाय, ३ मरणान्तिक, ४ वैक्रिय, ५ तैजस, ६ आहारिक, ७ केवली।

१० सन्नी—मन होयसो सन्नी, मन नहीं होय सो असन्नी।
११ वेद—वेद तीन—पुरुष वेद, स्त्री वेद, नपुंसक वेद।
१२ पज्जति—पर्याय छव।
१३ दृष्टि—दृष्टि तीन।

१४ दर्शन—दर्शन किसको कहते हैं? जिसमें महा सत्ता (सामान्यका) प्रतिभास (निराकार-झलक) हो, उसको दर्शन कहते हैं। दर्शनके च्यार भेद —

१ चक्षु दर्शन—नेत्र जन्य मतिज्ञानसे पहिले सामान्य प्रतिभास या अवलोकन को चक्षु दर्शन कहते हैं।

२ अचक्षु दर्शन—नेत्रके सिवाय दूसरी इन्द्रियो और मन सम्बन्धी मतिज्ञान के पहिले होने वाले सामान्य अवलोकन को अचक्षु दर्शन कहते हैं।

३ अवधि दर्शन—अवधि ज्ञानसे पहिले होने वाले सामान्य अवलोकन को अवधि दर्शन कहते हैं।

४ केवल दर्शन—केवल ज्ञानसे पहिले होने वाले सामान्य अवलोकन को केवल दर्शन कहते हैं।

१५ नाण—ज्ञान किसको कहते हैं ? किसी विवक्षित पदार्थ की सत्ताके विशेष पदार्थ का विषय करने वाले को ज्ञान कहते है। उसके भेद पाच हैं—

१ मतिज्ञान—इन्द्रिय और मनकी सहायता मे जो ज्ञान हो, उसको मतिज्ञान कहते है।

२ श्रुतज्ञान—मतिज्ञान से जाणे हुवे पदार्थ से सम्बन्ध लिये हुवे किसी दूसरे पदार्थ के ज्ञानको श्रुतज्ञान कहते है, जैसे—"घट" शब्द सुननेके अनन्तर उत्पन्न हुआ कबुग्रीवादि रूप घट का ज्ञान।

३ अवधि ज्ञान—द्रव्य क्षेत्र काल भावकी मर्यादा लिये जो रूपी पदार्थको स्पष्ट जाणे।

४ मनपर्यव ज्ञान—द्रव्य क्षेत्र काल भाव की मर्यादा को लिये हुवे जो दूसरेके मनमें तिष्टने (ठहरे) हुए रूपी पदार्थ को स्पष्ट जाणे।

५ केवल ज्ञान—जो त्रिकालवर्ती समस्त पदार्थों को युगपत् (एक साथ) स्पष्ट जाणे।

१६ अनाण—अज्ञान तीन--मतिअज्ञान, श्रुत अज्ञान, विभग ज्ञान,

१७ जोग—जोग पनरे।

१८ उपयोग—उपयोग बारे।

१९ किमाआहारे—आहार लेवे जघन्य तीन दिशी को उत्कृष्टि छव दिशी को।

२० उववाय—उपजे १—२—३ जाव सख्याता असख्याता अनन्ता।

२१ ठीई—स्थिति जघन्य अन्तर मुहूर्त की उत्कृष्टी ३३ सागर की।

२२ समोइया असमोइया—दोनो मरण मरे, समोइया तो कीड़ोनी कतार नी परे जीवरा प्रदेश छुटा छुटा निकले, असमोइया बदूकरे गोली री माफक जीवरा प्रदेश एक साथ निकले।

२३ चवण—चवे १-२-३ जाव अनन्ता ।
२४ गई—गति आगति च्यार ।
२५ प्राण—प्राण दश ।
२६ जोग—जोग तीन—१ मन, २ वचन, ३ काया ।

अब एक दंडक नारकी रो, तेरह दंडक देवतारा (भुवनपतिरा १० दंडक, वाणव्यन्तररो १ दण्डक ज्योतिषी रो १ दण्डक, वीमाणीकेरो १ दण्डक) यह १४ दण्डक ऊपर २६ द्वार कहे है —

१ शरीर—शरीर पावे तीन वैक्रिय, तेजस, कारमण ।

२ अवगाहना—पहली नारकीसु सातमी नारकी तक भव धारिणी शरीर री अवगाहना जघन्य अगुल रे असख्यात मे भाग। उत्कृष्टी पहली नारकी री ७॥। धनुष ६ अंगुल की,

दुजी नारकी री	१५॥	धनुष १२ अगुल की
तीजी ,,	३१।	,,
चौथी ,,	६२॥	,,
पाचमी ,,	१२५	,,
छट्ठी ,,	२५०	,,
सातमी ,,	५००	,,

उतर वैकिय करे तो जघन्य अगुल रे स-रयातमें भाग, उत्कृष्टी आप आपरे अवगाहनासे दूणी जैसे-सातमी नारकीरी भव धारणी शरीर री ५०० धनुपरी उतर वैक्रिय करे तो १००० धनुपरी। भुवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिपी, पहिले दुजे देव लोकरी अवगाहना जघन्य अगुल रे असरयात मे भाग, उत्कृष्टी ७ हाथरी। नीजे देशलोक सु सर्वार्थसिद्ध तक जघन्य अगुल रे असरयात में भाग उत्कृष्टी न्यारी न्यारी—

तीजे, चोथे, देव लोकरी ६ हाथरी
पाचवे छठे

सातवे आठवे ,, ४ ,,
नवमें सु बारमें ,, ३ ,,
नव ग्रैवेयक री ,, २ ,,
पाच अनुत्तर विमानमें एक हाथरी।
उतर वैक्रिय करे तो जघन्य [illegible] रयातमें भाग, उत्कृष्टी बारमें देव [illegible] लाख जोजन री। नवग्रैवेयक [illegible] नुत्तर विमाण रा देवता वैक्रिय करे नहीं।

३ सघयण—सघयण नहीं, [illegible] पुद्गल परीणमे और [illegible] परीणमें।

४ संठाण—नारकी में [illegible] हुंडक देवतामें समचौरस।

५ कषाय—नारकी देवतामें १३ दंडकमें क- षाय पावे च्यारूं ही।

६ सज्ञा- नारकी देवतामें १४ दण्डकमें पावे च्यारू ही।

७ लेश्या—पहिली दुजी नारकी मे लेश्या पावे एक—कापोत। तीसरी नारकीमे दोय -कापोत और नील। चौथी नारकी में एक -नील। पाचमी नारकी में दोय--नील और कृष्ण। छठी नारकी में एक कृष्ण। सातमी नारकीमे महा कृष्ण। दश भुवनपति और वाण व्यन्तर देवतामें लेश्या पावे च्यार पहेलडी। ज्योतिषी तथा पहिले दूजे देवलोक में एक तेजो। तीजे चोथे पाचमें देव लोक में पद्म। छठे देव लोक से नव नवग्रैवेयक तक शुक्ल। पाच अनुत्तर विमाणमे परम शुक्ल।

८ इन्द्रिय—नारकी देवता में इन्द्रिया पावे पाचो ही।

९ समुद्घात—नारकी मे समुद्घात पावे च्यार-वेदनी, कषाय, मरणातिक, वैक्रिय भुवनपतिसु जाव बार मे देवलोक तक समुद्घात पावे पाच

पहेलड़ी। नवग्रैवेयक और पाच अनुत्तर विमान में समुद्घात पावे तीन-वेदनी, कपाय, मरणान्तिक।

१० सन्नी—पहिली नारकी, भुवनपति वाणव्यतर में सन्नी असन्नी दोनो उपजे। दुजी नारकी सु सातमी नारकी तक तथा ज्योतिपी सु पांच अनुत्तर विमाण तक सन्नी उपजे।

११ वेद—नारकीमे वेद पावे एक-नपुंसक। भुवनपति, वाणव्यतर, जोतिपी, पहिले दूजे देवलोक मे वेद पावे दोय-स्त्रीवेद पुरुप वेद। तीसरे देवलोकसु सर्वार्थसिद्ध तक वेद पावे एक-पुरुपवेद।

१२ पज्जति—नारकी देवतामे पर्याय पावे पाच, कारण मन और भापा भेली बांधे।

१३ दृष्टी—नारकी, भुवनपतिसु बारमें देवलोक तक दृष्टी पावे तीनुंही। नवग्रैवेयक में दृष्टी पावे दोय-सम्यगदृष्टी मिथ्यादृष्टी। पाच अनुत्तर विमान मे दृष्टी पावे एक सम्यगदृष्टी।

१४ दशन--नारकी, देवतामें दर्शन पावे तीन -चक्षु दशन, अचक्षु दर्शन, अवधि दर्शन।

१५ नाण—नारकी, देवतामें ज्ञान पावे तीन मति ज्ञान, श्रुति ज्ञान, अवधि ज्ञान।

१६ अनाण—नारकी, भुवनपति सुं नवग्रैवेयक तक अज्ञान पावे तीन, मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान, विभग ज्ञान। पाच अनुतर विमान में अज्ञान पावे नहीं।

१७ योग—नारकी, देवता मे योग पावे इग्यारे -४ मनरा, ४ वचनरा, ३ कायारा वैक्रिय, (वैक्रियरो मिश्र, और कारमण)।

१८उपयोग—नारकी, देवता में नवग्रैवेयक तक उपयोग पावे नव—३ ज्ञान, ३ अज्ञान, ३ दर्शन।

पाच अनुत्तर विमानमे उपयोग पावे छव।

१६ आहारे—नारकी, देवता आहार लेवे छउ दिशारो।

२० उववाय—नारकी, भुवनपति सुं आठमें देव-

लाक तक एक समयमें १-२-३ जाव, सख्याता असंख्याता उपजे। नवमे देवलोकसे सर्वार्थसिद्ध तक १-२-३ जाव सख्याता उपजे।

२१ स्थीति—नारकी की स्थिति—

१ पहिली नारकी की स्थिति ज० दश हजार वर्ष की उ० १ सागर की।

२ दूसरी नारकी की स्थिति ज० एक सागरकी उ० ३ सागरकी।

३ तीसरी नारकी की स्थिति ज० ३ सागरकी उ० ७ सागरको।

४ चौथी नारकी की स्थिति ज० ७ सागरकी उ० १० सागर की।

५ पाचमी नारकी की स्थिति ज० १० सागरकी उ० १७ सागर की।

६ छट्ठी नारकी की स्थिति ज० १७ सागर की उ० २२ सागर की।

७ सातमी नारकी की स्थिति ज० २२ सागरकी उ० ३३ सागरकी।

भुवन पति देवता की स्थिति ।

असुर कुमार का दोय इन्द्रा- १ चवरेन्द्रजी २ वलेन्द्रजी । १चवरेन्द्रजी की चवरचचा राजधानी मेरुसे दक्षिण दिशी में,२ वलेन्द्रजी की वलनचचा राजधानी मेरु से उत्तर दिशी में। चवरेन्द्रजी की चवरचचा राजधानी के देवता की स्थिति-जघन्य १० हजार वर्ष की, उत्कृष्टी १ सागर की। इनके देव्या की ज० १० हजार वर्ष की उ० ३॥ पल्योपमकी। दक्षिण दिशी में नवनिकाय के देवता की ज० १० हजार वर्ष की उ० १॥ पल्योपम की।इनके देव्या की ज० १० हजार वर्ष की उ० पौण पल्योपमकी। वलेन्द्रजी की वलनचचा राजधानी के देवता की स्थिति ज० १० हजार वर्ष जाभेरी उ० १ सागर जाभेरी। इनके

देव्याकी स्थिति ज० १०हजार वर्षकी उ०४॥ पल्योपमकी। उत्तर दिशा के नवनिकायके देवता की स्थिति ज०१०हजार वर्ष जाभेरी उ०देश उणी दोय पल्योपमकी। इनके देव्या की स्थिति ज० १० हजार वर्ष की उ० देश उणी १ पल्योपमकी। वाणव्यतर देवता की स्थिति ज० १० हजार वर्षकी उ० १ पल्योपम की। इनके देव्यांकी स्थिति ज० १० हजार वर्षकी उ० आधा पल्योपमकी।

ज्योतिषी देवता की स्थिति—

इनके भेद पांच-१ चन्द्रमा, २ सूर्य, ३ ग्रह, ४ नक्षत्र, ५ तारा। चन्द्रवासी देवताकी स्थिति ज० पाव पल्योपम की उ० १ पल्योपम जाभेरी १ लाख वर्षकी। इनके देव्यां की ज० पाव पल्योपमकी उ० आधा पल्योपम जाभेरी ५० हजार वर्षकी। सूर्यवासी देवता की स्थिति ज० पाव

पल्योपमकी उ० १ पल्योपम जाझेरी १ हजार वर्षकी। इनके देव्या की स्थिति ज० पाव पल्योपम की उ० आधापल्योपम जाझेरी ५०० वर्षकी। ग्रहवासी देवता की स्थिति ज० पाव पल्योपमकी उ० १ पल्योपमकी, इनके देव्याकी स्थिति ज० पाव पल्योपम की उ० आधा पल्योपमकी।

नक्षत्र वासी देवता की स्थिति—ज० पाव पल्योपमकी उ० आधा पल्योपम की। इनके देव्याकी स्थिति ज० पाव पल्योपम की उ० पाव पल्योपम जाझेरी। तारावासी देवता की स्थिति ज० पल्योपमके आठमें भाग उ०पाव पल्योपम की। इनके देव्या की स्थिति ज० पल्योपम के आठमें भाग उ० पल्योपमके आठमें भाग जाझेरी।

वैमानिक देवता की स्थिति—

१पहिले देवलोक के देवता की स्थिति-ज० १प-

ल्योपमकी उ० २ सागर की। इनके देवीया दोय प्रकार की-१ परिग्रही, २ अपरिग्रही, परिग्रही की ज० १ पल्योपमकी उ० ७ पल्योपमकी। अपरिग्रही की ज० १ पल्योपम की उ० ५० पल्योपम की।

२ दूसरे देवलोक के देवता की स्थिति-जघन्य १ पल्योपम जाझेरी उ० २ सागर जाझेरी, इनके देवीया का दोय भेद-(१) परिग्रही, (२) अपरिग्रही। परिग्रही की ज० १ पल्योपमजाझेरी उ० ६ पल्योपम की। अपरिग्रहीकी ज० १ पल्योपम जाझेरी उ०५५ पल्योपम की।

३ तीसरे देवलोक	की ज०	२ सागर की	उ०	७ सागर की।
४ चौथे	" "	२ सा० जाझेरी	"	७ सागर जाझेरी
५ पांचमे	" "	७ सागर की	"	१० सागर की
६ छठे	" "	१० "	"	१४ "
७ सातमे	" "	१४ "	"	१७ "
८ आठमे	" "	१७ "	"	१८ "
६ नवमे	" "	१८ "	"	१६ "
१० दसमे	" "	१६ "	"	२० "

११ ग्यारहमे देवलोक की ज०	२० सागर की उ०	२१ सागर की	
१२ बारहमे "	२१ "	" २२	"
१३ पहिले ग्रैवेयक	२२ "	" २३	"
१४ दूसरे " "	२३ "	" २४	"
१५ तीसरे " "	२४ "	" २५	"
१६ चौथे " "	२५ "	" २६	"
१७ पाचमे " "	२६ "	" २७	"
१८ छट्ठे " "	२७ "	" २८	"
१९ सातमें " "	२८ "	" २९	"
२० आठमें " "	२९ "	" ३०	"
२१ नवमें " "	३० "	" ३१	"

२२ च्यार अनुतर विमानकी ज० ३१ सागर की उ० ३३ सागरकी ।
२३ सर्वार्थ सिद्ध की स्थिति नो जघन्य नो उत्कृष्टी ३३ सागरकी ।

२२ समोइया असमोइया—नारकी देवता समोइया असमाइया दोनुं मरण मरे ।

२३ चवण—नारकी, भुवनपति सु आठमें देवलोक तक एक समय मे १-२-३ जाव स-

ख्याता असख्याता च्यवे। नवमें देवलोक से सर्वार्थ सिद्धि तक १-२-३ जाव संख्याता च्यवे।

२४ गइ—पहेली नारकी सुं छट्ठी नारकी तक दोय गतिरा (मनुष्य तिर्यंचरा) आवे, दोय गतिमें (मनुष्य तिर्यंचमें) जावे। दण्डक आसरी वीसमें इकीसमे रा आवे, वीसवे इकीसवे में जावे। सातमी नारकी मे दोय गतिरा मनुष्य तिर्यंचरा आवे, एक तिर्यंच गति मे जावे। दण्डक आसरी वीस में इकीसमेंरा आवे वीसवेंमें जावे। भुवनपति, वाणव्यंतर, जोतिषी, पहिले, दूजे देवलोक तक दोय गतिरा मनुष्य तिर्यंचरा आवे दोय गतिमें मनुष्य तिर्यंचमें जावे। दण्डक आसरी वीसमे इकीसमे रा आवे, पाच दण्डकमे जावे-पृथ्वि पाणी वनस्पति, तिर्यंच, मनुष्य में। तीजे देवलोक सुं आ-

ठमें देवलोक तक दोय गतिरा तिर्यंच मनुष्यरा आवे, दोय गतमें तिर्यंच मनुष्य में जावे। दण्डक आसरी वीसमें इकीस में रा आवे, वीस मे इकीसवें में जावे। नवमें देवलोक सु सर्वार्थ सिद्ध ताइ एक मनुष्य गतरो आवे, एक मनुष्य गति में जावे। दण्डक आसरी इकीसमें रो आवे इकीसवे में जावे।

२५ प्राण—नारकी, देवतामें प्राण पावे दसु ही।

२६ जोग—नारकी, देवतामें जोग पावे तीनु ही।

---

५ स्थावर और असन्नी मनुष्यरोद्वारः—

१ शरीर—च्यार स्थावर में और असन्नी मनुष्य में शरीर पावे तीन औदारिक, तेजस, कारमण। वायुकायमे शरीर पावे च्यार-औदारिक, वैक्रिय तेजस, कारमण।

२ अवगाहना—च्यार स्थावर और असन्नी म-
नुष्य की जघन्य उत्कृष्टी अगुलके असख्या-
त में भाग। वनस्पति की ज० अंगुलके
असंख्यात में भाग, उत्कृष्टी १००० जोजन
जाभेरी।

३ सघयण—संघयण पावे एक छेवट्ठु।

४ सठाण—सठाण पावे १ हुंडक।

५ कषाय—कषाय पावे च्यारुंही।

६ सज्ञा—सज्ञा पावे चारु ही।

७ लेश्या—पृथ्वी पाणी, वनस्पति में लेश्या पावे
च्यार-कृष्ण, नील, कापोत, तेजो। तेउ,
वायु, असन्नी मनुष्य में लेश्या पावे तीन-
कृष्ण, नील, कापोत।

८ इन्द्रिय-पाच स्थावर में इन्द्रिय पावे एक स्प-
र्शेन्द्रिय। असन्नी मनुष्य में इन्द्रिय पावे
पांचुंही।

९ समुद्घात-च्यारमें स्थावरमें और असन्नी मनुष्य

ठमें देवलोक तक दोय गतिरा तिर्यंच मनुष्यरा आवे, दोय गतमें तिर्यंच मनुष्य में जावे। दण्डक आसरी वीसमें इकीस मेंरा आवे, वीस में इकीसवें में जावे। नवमें देवलोक सु सर्वार्थ सिद्ध ताद एक मनुष्य गतरो आवे, एक मनुष्य गति में जावे। दण्डक आसरी इकीसमें रो आवे इकीसवे में जावे।

२५ प्राण—नारकी, देवतामें प्राण पावे दसु ही।
२६ जोग—नारकी, देवतामें जोग पावे तीनु ही।

---

५ स्थावर और असन्नी मनुष्यरोद्वारः—

१ शरीर—च्यार स्थावर में और असन्नी मनुष्य में शरीर पावे तीन औदारिक, तजस, कारमण। वायुकायमें शरीर पावे च्यार-औदारिक, वैक्रिय, तैजस, कारमण।

२ अवगाहना—च्यार स्थावर और असन्नी मनुष्य की जघन्य उत्कृष्टी अगुलके असख्यात में भाग। वनस्पति की ज० अगुलके असंख्यात में भाग, उत्कृष्टी १००० जोजन जाभेरी।

३ सघयण—संघयण पावे एक छेवटु।

४ सठाण—सठाण पावे १ हुंडक।

५ कषाय—कषाय पावे च्यारुंही।

६ सज्ञा—सज्ञा पावे चारुं ही।

७ लेश्या—पृथ्वी पाणी, वनस्पति मे लेश्या पावे च्यार-कृष्ण, नील, कापोत, तेजो। तेउ, वायु, असन्नी मनुष्य में लेश्या पावे तीन-कृष्ण, नील, कापोत।

८ इन्द्रिय-पाच स्थावर में इन्द्रिय पावे एक स्पर्शेन्द्रिय। असन्नी मनुष्य में इन्द्रिय पावे पांचुंही।

९ समुद्घात-च्यारमें स्थावरमें और असन्नी मनुष्य

में समुद्घात पावे तीन-वेदनी, कषाय, मरणान्तिक। वायु कायमें च्यार, वैक्रिय वधी।

१० सन्नी-पाच स्थावर और असन्नी मनुष्य असन्नो है, सन्नी नथी।

११ वेद-पावे एक नपुसक।

१२ पज्जति- पाचस्थावर मे पर्याय पावें च्यार पहेलड़ी। असन्नी मनुष्यमें च्यार अधुरी।

१३ दृष्टी-दृष्टीपावे, एक मिथ्यादृष्टी।

१४ दर्शन पाचस्थावरमें दर्शन पावे एक अचक्षु दर्शन। असन्नी मनुष्य मे दर्शन पावे, दोय चक्षु, अचक्षु।

१५ नाण ज्ञान नथी।

१६ अनाण अज्ञान पावे दोय-मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान।

१७ जोग-च्यार स्थावर और असन्नी मनुष्यमे योग पावे, तीन औदारिक, औदरिकरो मिश्र, कारमण। वायु कायमें योग पावे

पाच, वैक्रिय, वैक्रियरो मिश्र वर्ज्यो।

१८ उपयोग-पाच स्थावर में उपयोग पावे तीन-दो अज्ञान, एक दर्शन। असन्नी मनुष्यमें उपयोग पावे च्यार-दो अज्ञान, दो दर्शन।

१६ आहार-पांच स्थावर व्याघात आसरी आहार लेवे सिये ३ दिशीरो, सिये ४ दिशीरो, सिये ५ दिशीरो, निर्व्याघात आसरी आहार लेवै नियमा छव दिशीरो। असन्नी मनुष्य आहार लेवे नियमा छव दिशीरो।

२० उववाय-च्यार स्थावर मे समय समय मे असख्याता उपजे, वनस्पति में सठाणे आसरी समय समय मे अनता उपजे। पर ठाणे (दूसरे ठीकाणें) आसरी समय समयमें असख्याता उपजे। असन्नी मनुष्य में एक समय में १-२-३ जाव सख्याता असख्याता उपजे।

२१ स्थिति-पाच स्थावर की स्थिति ज० अंतर

तीयँच, मनुष्यमें जावे। तेउ, वाउमें दोय गतिरा मनुष्य तियँचरा आवे, एक तियँच गतमे जावे।

दंडक आसरी दश दण्डकरा पांच स्थावर तीन, विकलेन्द्रिय, तियँच, मनुष्यरा आवे, नव दण्डकमें पाच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय तियँचमें जावे,असन्नो मनुष्यमें दोयगतरा मनुष्य तियँचरा,आवे, दोयगतमें मनुष्य तियँचमे जावे।

दण्डक आसरी आठ दण्डकरा पाच स्थावर। तीन विकलेन्द्रीरा आवे-दस दण्डकमे पाच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, तियँच मनुष्य में जावे,

२५—प्राण-पाच स्थावरमें प्राण पावे च्यार। असन्नी मनुष्यमें प्राण पावे आठ अधुरा,

२६ जोग—जोग---पावे एक काया रो।

तीन विकलेन्द्रिय और असनी तियँच पचेन्द्रियका द्वार --

मुहूर्त्तकी उ० पृथ्वी कायकी २२००० वर्ष की, अपकायकी ७००० वर्षकी, तेउकाय की तीन अहोरात्री की, वायुकायकी ३००० वर्षकी, वनस्पति काय की १०००० वर्षकी, असन्नी मनुष्यकी ज०उ०अतर मुहूर्त्त की।

२२ समोइया असमोइया-दोनु मरण मरे।

२३ चवण-च्यार स्थावरमें समयसमयमें असख्यता च्यवे। वनस्पतिमें सठाणे आसरी समय समयमें अनता च्यवे, परठाणे (दूजे ठीकाणे) आसरी समयसमयमें असख्याता च्यवे। असन्नी मनुष्य एक समय मे १-२-३ जाव सख्यता असख्यता च्यवे।

२४ गइ-पृथ्वी पाणी, वनस्पतिमें तीन गतिरा-आवे तिर्यंच, मनुष्य, देवतारा। दोय गतिमें जावे-मनुष्य, तिर्यचमें। दण्डक आसरी तेइस दण्डकरा आवे नारकी टली, दस दण्डकमें पाच स्थावर, तीन विकलेन्द्री,

तीयँच, मनुष्यमें जावे। तेउ, वाउमें दोय गतिरा मनुष्य तियँचरा आवे, एक तियँच गतमें जावे।

दंडक आसरी दश दण्डकरा पाच स्थावर तीन, विकलेन्द्रिय, तियँच, मनुष्यरा आवे, नव दण्डकमें पाच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय तियँचमें जावें,असन्नी मनुष्यमें दोयगतरा मनुष्य तियँचरा,आवे, दोयगतमें मनुष्य तियँचमें जावे।

दण्डक आसरी आठ दण्डकरा पाच स्थावर। तीन विकलेन्द्रीरा आवे-दस दण्डकमे पाच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, तियँच मनुष्य में जावे,

२५—प्राण-पाच स्थावरमे प्राण पावे च्यार।

असन्नी मनुष्यमें प्राण पावे आठ अधुरा,

२६ जोग—जोग---पावे एक काया गे।

तीन विकलेन्द्रिय और असनी तियँच पचेन्द्रियका द्वार --

१ शरीर—शरीर पावे तीन औदारिक, तेजस, कारमण,

अवगाहना—

बेइन्द्रियरी जघन्य अंगुलका असंख्यातमें भाग उ० १२ जोजनरी
तइन्द्रियरी ,, , , ३ कोसरी (गाउ)
चोइन्द्रियरी , , ,, ,, ४
असन्नी जलचररी , ,, , , १००० जोजनरी
,, थलचररी , , ,, , प्रत्येक कोसरी(गाउ।
, खेचररी ,, , , , ,, ,, धनुषरी
उरपररी , ,, जोजनरी
भुजपररी , , धनुषरी

३ संघयण—संघयण पावे एक छेवटु ।

४ संठाण—संठाण पावे एक हुण्डक ।

५ कषाय---कषाय पावे च्यारु ही ।

६ सञ्ज्ञा---सञ्ज्ञा पावे च्यार ही ।

७ लेश्या---लेश्या पावे तीन-- कृष्ण, नील, कापोत ।

८ इन्द्रिय- बेइन्द्रियमे इन्द्रिय पावे दोय-स्पर्शेन्द्रिय, रसेन्द्रिय, । तेइन्द्रिय में इन्द्रिय पावे

तीन---घ्राणेन्द्रिय वधी। चौरिन्द्रिय में इन्द्रिय पावे च्यार--चक्षुइंद्रिय वधी। असन्नी तिर्यंच पचेंद्रिय में इन्द्रिय पावे पांच ही।

६ समुद्घात---समुद्घात पावे तीन-वेदनी, कषाय, मरणान्तिक।

१० सन्नी---तीन विकलेन्द्रिय और असन्नी तिर्यंच पचेन्द्रि यह दोनो असन्नी हैं, सन्नी नथी।

११ वेद--वेद पावे एक नपु सक।

१२ पर्जाति--पर्याय पावे पांच मन पर्याय टली।

१३ दृष्टि--दृष्टि पावे दोय-सम्यग् दृष्टि, मिथ्या-दृष्टी।

१४ दर्शन--वेइन्द्रिय तेइन्द्रियमें दर्शन पावे एक चक्षु दर्शन, चौरिन्द्रिय में असन्नी पंचेन्द्री में दशन पावे दोय—चक्षु दर्शन, अचक्षु दर्शन।

१५ नाण—ज्ञान पावे २-मतिज्ञान, श्रु त ज्ञान।

१६ अनाण-अज्ञान पावे दो-मति अज्ञान श्रुत अज्ञान ।

१७ जोग-जोग पावे ४ औदारिक ओदारिक रो मिश्र कारमाण और व्यवहार भाषा ।

१८ उपयोग-बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय में उपयोग पावे पाच-२ ज्ञान २ अज्ञान १ दर्शन । चौरिन्द्रिय और असन्नी तिर्यंच पचेंद्रिय मे छव २ ज्ञान २ अज्ञान २ दर्शन ।

१६ आहार---आहार लेवे नियमा छउ दिशीरो।

२० उववाय---तीन विकलेन्द्रिय और असन्नी तिर्यंच पचेन्द्रिय एक समय में १-२-३ जाव सख्याता असख्याता उपजे ।

२१ स्थिति-सनकी जघन्य अन्तर मुहुर्तरी। उत्कृष्टी बेइन्द्रिय री १२ वर्ष की,
तेइन्द्रिय री ४६ अहोरात्री री,
चौरिन्द्रिय री ६ महीना री,
असन्नी जलचर री क्रोड पूर्व री ।

,, थलचर री ८४००० वर्षरी

,, उरपर री ५३००० ,,

,, भुजपर री ४२००० ,,

,, खेचर री ७२००० ,,

२२ समोइया असमोइया—दोनुं मरण मरे।

२३ चवण-एक समय में १-२-३ जाव सख्याता असख्या च्यवे।

२४ गई---तीन विकलेन्द्रिय में दोय गतिरा मनुष्य तिर्यंच रा आवे, और दोय गतिमे मनुष्य तिर्यंच में जावे। दण्डक आसरी दश दण्डक रा-पाच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यंच मनुष्यरा आवे। दश दडक मे-पाच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यंच मनुष्य में जावे। असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रिय में दोय गतरा-तिर्यंच मनुष्यरा आवे, च्यार गतिमें जावे। दण्डक आसरी दश दण्डक रा-पाच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय तिर्यंच

मनुष्यरा आवे, बाइस दराडकमें जावे-ज्योतिषी वैमाणिक वर्ज्या।

२५ प्राण बेइन्द्रिय में प्राण पावे छव-रसेन्द्रिय बलप्राण, स्पर्शन्द्रिय बलप्राण वचन बल प्राण, काया बल प्राण श्वासोश्वास बल प्राण, आयुष्य बल प्राण। तेइन्द्रिय में प्राण पावे सात, ६ तो पूर्ववत् घ्राणेन्द्रिय वधी। चौरिन्द्रिय में प्राण पावे आठ, ७ तो तेइन्द्रिय में कहा जिके और चक्षु इन्द्रिय वधी। असन्नी पचेंद्रिय मे प्राण पावे नव, १ मन बलप्राण टल्यो।

२६ जोग-जोग पावे दोय वचन रो काया रो।

सन्नी तिर्यंच पंचेंद्रियरो द्वार।

१ शरीर-शरीर पावे च्यार आहारिक टल्यो ।

२ अवगाहना---

जलचर री ज० अगुलके असंख्यातमें भाग उ० १००० जोजन री ।
थलचर री „ „ „ „ ६ कोसरो (गाउ)
खेचर री „ „ „ „ प्रत्येक धनुप री ।
उरपर री „ „ „ „ १००० जोजन री ।
भुजपर री „ „ „ „ प्रत्येक कोसरी (गाउ)

३ सघयण-सघयण पावे छउ ही।

४ सठाण--सठाण पावे छउ ही ।

५ कपाय--कपाय पावे च्यारुं ही ।

६ सज्ञा-सज्ञा पावे चारु ही ।

७ लेश्या-लेश्या पावे छउ ही ।

८ इंद्रिय-इंद्रिय पावे पाचुं ही।

९ समुद्घात-समुद्घात पावे पाच-वेदनीय, कपाय, मरणांतिक, वैक्रिय, तैजस ।

१० सन्नी-सन्नी है असन्नी नथी ।

११ वेद-पावे तीनु ही।

१२ पजनि-पर्याय पावे छउ ही।

१३ दृष्टि दृष्टि पावे तीनु ही।

१४ दर्शन दर्शन पावे तीन केवल दर्शन टल्यो।

१५ नाण-ज्ञान पावे तीन मनपर्यव ज्ञान, केवल ज्ञान टल्यो।

१६ अनाण-अज्ञान पावे तीनु ही।

१७ जोग-जोग पावे १३, आहारिक, आहारिक री मिश्र टल्यो।

१८ उपयोग-उपयोग पावे नव-३ ज्ञान ३ अज्ञान ३ दर्शन।

१९ आहार-आहार लेवे नियमा छव दिशी रो।

२० उववाय-एक समय मे १-२-३ जाव सख्याता असख्याता उपजे।

२१ स्थिति-

जलचर री ज० अन्तर मुहुर्त री उ० कोड पूर्वरी,
थलचर री „ „ „ ३ पल्योपमरी,

खेचर री ,, ,, ,, पल्योपमरे असंख्यातमें भाग ।
उरपर री ,, ,, ,, क्रोड पूर्वरी
भुजपर री ,, ,, ,, ,,

२२ समोइया असमोइया-दोनुं मरण मरे ।

२३ चवण-एक समयमें १-२-३ जाव संख्याता असंख्याता च्यवे ।

२४ गइ च्यार गतिरा आवे च्यार गतिमें जावे । दण्डक आसरी चौवीस दण्डक रा आवे चौवीस दण्डक में जावे ।

२५ प्राण-प्राण पावे दसुं ही ।

२६ जोग-जोग पावे तीनु ही ।

गर्भज मनुष्य का द्वार ।

१ शरीर-मनुष्य में शरीर पावे पाचुही ।

२ अवगाहना--पाच भरत, पाच ऐरवत के मनुष्यो की अवसर्पिणी के पहिला आरा लागता तीन ३ गाउ की उतरता २ गाउ

की। दूजा आरा लागता २ गाउकी, उ
रता १ गाउकी। तीजा आरा लागता
गाउकी, उतरता ५०० धनुप री। चो
आरा लागता ५०० धनुप री उतरता
हाथरी। पाचमा आरा लागता ७ हाथ
उतरता १ हाथरी। छट्टा आरा लागता
हाथरी, उतरता मुडे हाथरी॥ और उत्स
र्प्पिणी में चढ़ती कहनी। वैक्रिय उत्कृष्टी
लाख जोजन की करे।

महाविदेहक्षेत्रके मनुष्यरी ५०० धनुपरी॥

३ सघयण—मनुष्यमें सघयण पावे छउ ही।

४ सठाण—मनुष्यमें सठाण पावे छउ ही।

५ कपाय—मनुष्यमे कपाय पावे चारु ही।

६ सज्ञा—मनुष्यमें सज्ञा पावे चारु ही।

७ लेश्या—मनुष्यमें लेश्या पावे छउ ही।

८ इन्द्रिय—मनुष्यमें इन्द्रिय पावे पाचु ही।

९ समुद्घात-मनुष्यमे समुद्घात पावे सातु ही।

सन्नी—मनुष्य सन्नी है।
वेद—मनुष्यमें वेद पावे तीनु ही।
पज्जति—मनुष्यमें पर्याय पावे छउं ही।
दृष्टि—मनुष्यमें दृष्टि पावे तीनुं ही।
दर्शन—मनुष्यमें दर्शन पावे च्यारु ही।
नाण—मनुष्यमें ज्ञान पावे पांचु ही।
अनाण—मनुष्यमें अज्ञान पावे तीनुं ही
जोग—मनुष्यमें जोग पावे पन्नरे ही।
उपयोग—मनुष्यमें उपयोग पावे बारे ही।
आहार—मनुष्यमें आहार लेवे नियमा छउ दिशिरा।
उववाय—मनुष्य एक समयमें १-२-३ जाव संख्याता उपजे।
स्थीति—५ भरत, ५ ऐरवत मनुष्यकी लागते पहिले आरे ३ पल्योयमकी। उतरते पहिले आरे लागते दूसरे आरे २ पल्योपम की। उतरते दूसरे आरे लागते

तीन गाउ की। ५६ अतरद्वीप के जुगलीया की ८०० धनुपरी।

३ सघयण—युगलीया में सघयण पावे एक वज्रऋपभनाराच सघयण।

४ सठाण—युगलीया मे सठाण पावे एक समचोरस।

५ कपाय—युगलीया में कपाय पावे चारु ही।

६ सज्ञा—युगलीया मे सज्ञा पावे चारु ही।

७ लेश्या—युगलीया मे लेश्या पावे च्यार पहिलडी।

८ इ द्रिय—युगलीया में इ द्रिय पावे पाचु ही।

९ समुद्घात—युगलीया में समुद्घात पावे तीन-वेदनीय, कपाय, मरणातिक।

१० सन्नी—युगलीया सन्नी है, परन्तु ५६ अतरद्वीपमे सन्नी असन्नी दोनु उपजे।

११ वेद—युगलीयामें वेद पावे दोय स्त्री वेद पुरुप वेद ।

१२ पज्जति—युगलियामें पर्याय पावे छउ ही ।

१३ दृष्टि—५६ अतरद्वीपमे दृष्टि पावे एक मिथ्या दृष्टि।तीस अकर्मभूमिमें दृष्टि पावे दोय । मिथ्यादृष्टि, सम्यगदृष्टि ।

१४ दर्शन—युगलियामें दर्शन पावे दोय-चक्षु दर्शन, अचक्षुदर्शन ।

१५ नाण—तीस अकर्मभूमिमें ज्ञान पावे दोय मतिज्ञान श्रुत ज्ञान । ५६ अतरद्वीपामे ज्ञान नहीं है ।

१६ अनाण- युगलीयामे अनाण पावे दोय मति अज्ञान श्रुत अज्ञान ।

१७ जोग—युगलीयामे जोग पावे ११ । च्यार मनरा, च्यार वचन रा, औदारिक, औदारिकरो मिश्र, कार्मणकायारोजोग ।

१८ उपयोग—५६ अतरद्वीपांमें उपयोग पावे

तीन गाउ की। ५६ अतरद्वीप के जुगलीया की ८०० धनुपरी।

३ सघयण—युगलीया में सघयण पावे एक वज्रऋषभनाराच सघयण।

४ सठाण—युगलीया में सठाण पावे एक स-मचोरस।

५ कपाय—युगलीया में कपाय पावे चारु ही।

६ सज्ञा—युगलीया में सज्ञा पावे चारु ही।

७ लेश्या—युगलीया में लेश्या पावे च्यार पहिलडी।

८ इ द्रिय—युगलीया में इ द्रिय पावे पाचु ही।

९ समुद्घात—युगलीया में समुद्घात पावे तीन-वेदनीय, कपाय, मरणातिक।

१० सन्नी—युगलीया सन्नी है, परन्तु ५६ अंतर द्वीपमे सन्नी असन्नी दोनु उपजे।

११ वेद—युगलीयामे वेद पावे दोय स्त्री वेद पुरुष वेद ।

१२ पज्जति—युगलियामें पर्याय पावे छउ ही ।

१३ दृष्टि—५६ अंतरद्वीपमे दृष्टि पावे एक मिथ्या दृष्टि। तीस अकर्मभूमिमे दृष्टि पावे दोय । मिथ्यादृष्टि, सम्यग्दृष्टि ।

१४ दर्शन—युगलियामें दर्शन पावे दोय-चक्षु दर्शन, अचक्षुदर्शन ।

१५ नाण—तीस अकर्मभूमिमे ज्ञान पावे दोय मतिज्ञान श्रुत ज्ञान । ५६ अतरद्वीपामे ज्ञान नहीं है ।

१६ अनाण- युगलीयामे अनाण पावे दोय मति अज्ञान श्रुत अज्ञान ।

१७ जोग—युगलीयामें जोग पावे ११ । च्यार मनरा, च्यार वचन रा, औदारिक, औदारिकरो मिश्र, कार्मणकायारोजोग ।

१८ उपयोग—५६ अतरद्वीपामें उपयोग पाव

च्यार । २ अज्ञान २ दर्शन । ३० अकर्मभूमिमें छत्र—२ ज्ञान २ अज्ञान २ दर्शन ।

२६ आहार—युगलीया आहार लेवे नियमा छउ ढिशिरो ।

२० उववाय—युगालीया एक समयमें १-२-३ जाव सख्याता उपजे ।

२१ स्थीति—५ हेमवय ५ एरणवयकी स्थीति जघन्य देश उणी एक पल्योपमकी उत्कृष्टी एक पल्योपमकी । ५ हरीवास ५ रम्यकवासकी स्थीति जघन्य देश उणी दो पल्योपमकी उत्कृष्टी दो पल्योपमकी । ५ देवकुरु ५ उत्तरकुरुकी जघन्य स्थीति देश उणी तीन पल्योपमकी उत्कृष्टी तीन पल्योपमकी । ५६ अतरद्वीपके युगलीयाकी स्थीति जघन्य तथा उत्कृष्टी पल्योपमके असंख्यातमें भाग ।

२२ समोइया—युगलीया समोइया असमोइया

दोनुं मरण मरे।

२३ चवण—युगलीया एक समयमें १-२-३ जाव
सख्याता च्यवे।

२४ गइ—३० अकर्मभूमिमें दोय गतिरा तिर्यंच
मनुष्यरा आवे, एक देवगतिमें जावे
दंडक आसरी दोय दडकरा २० में २१ में दंड
करा आवे। तेरह दडकमे दस भुवनप
ति वाणव्यंतर, ज्योतिषी, वैमाणिक मे
देवलोक तक जावे। ५६ अंतर द्वीपमे
दोय गतिरा तिर्यंच मनुष्यरा जावे, ए
देवगतिमे जावे। दंडक आसरी दो
दंडकरा वीसमे इकीसमें रा आवे इग
रह दडकमे दस भुवनपति, वाणव्यंतर
जावे।

२५ प्राण—युगलीयामे प्राण पावे दसु ही
२६ जोग—युगलीयामें जोग पावे तीनुं ही।

—०—

सिद्धारो द्वार

१ शरीर—नथी। २ अवगाहना-सिद्धामें अवगाहना नथी, परतु आत्माके प्रदेशोंने आकाशके प्रदेश अवगाह्या है उस अपेक्षासु (अरूपी जीव के प्रदेशके घनकी) जघन्य १ हाथ ८ अगुलकी, मध्यम ४ हाथ १६ अगुलकी, उत्कृष्टी ३३३ धनुष ३२ अगुलकी। ३ सघयण नथी। ४ सठाणनथी। ५ कषाय नथी। ६संज्ञा नथी। ७लेश्या-नथी। ८ इन्द्रिय-नथी। ६ समुद्घात नथी। १० सन्नी—सन्नी असन्नी नथी। ११ वेद—नथी। १२ पज्जति—नथी। १३दृष्टी—एक सम्यग्‌दृष्टी। १४ दर्शन—एक केवल दर्शन। १५ नाण—एक केवल ज्ञान। १६ अनाण—नथी १७ जोग—नथी १८ उपयोग—दोय केवल ज्ञान केवल दर्शन। १६ आहार—नथी। २०उववाय—, समयमें १-२-३ जाव १०८ उपजे। २१ ...ति—एक सिद्ध आसरी आदि है परतु अंत

नहीं , घणा सिद्ध आसरी आदि भी नहीं अंत भी नहीं । २२ समोइया—सिद्ध मरे नहीं । २३ चवण—नथी । २४ गइ—गति आसरी सिद्धामें एक मनुष्य गतिरो जावे, दंडक आसरी इकीसमें दडक रो जावे, सिद्धांमें गया पीछै पाछो आवे नहीं। २५ प्राण—नथी । २६जोग—नथी ।

॥ इति लघु दण्डक समाप्तम् ॥

कालकामाप

समय किसको कहते हैं ? एक वस्त आख खोले या टमकारे इसमें असख्याता समय होता है ।

आवलिका किसको कहते हैं ? एक श्वासो-श्वासमें सख्याता आवलिका होती है ।

श्वासो-श्वास किसको कहते है ? निरोग पुरुष की नाड़ाके एकवार चलनेको श्वासो-श्वास काल कहते हैं। कोडाकोडी किसको कहते है ? एक

क्रोडको एक क्रोडसे गुणा करने पर जो लब्ध हो उसको एक क्रोडाक्रोडी कहते हैं। –

मुहूर्त किसको कहते हैं ? अड़तालीस मिनिटका एक मुहूर्त होता है। अन्तर-मुहूर्त किसको कहते हैं ? आवलिकासे उपर और मुहूर्त के भीतरके कालको अन्तर मुहूर्त कहते हैं। एक मुहूर्त में कितनी आवलिका होती है ? एक मुहूर्तमे १६७७७२१६ एक क्रोड सिड़सट लाखसित्योतर हजार दोयसो सोला आवलिका होती है। एक मुहूर्तमे (४८ मिनिटमे) कितने श्वासो-श्वास होते हैं ? तीन हजार सातसे तिहत्तर (३७७३) होते हैं। तीस मुहूर्तोंका अहोरात्र रूप एकदिन होता है। पदरह दिनोका एक पक्ष होता है। दो पक्षका एकमास होताहै, वारह मासका १ वर्ष होता है, असख्य वर्षोंका एक पल्योपम होता हैं, पल्योपम किसको कहते हैं ? चार कोसको कुवो लम्बो, च्यार कोसको

चवड़ो च्यार कोसको उंडो तीन गुणी जाफेरी परधि उस कुवेको देवकुरु उतरकुरुके जुगलियो का वालाग्र (केश) एक दिनके उगे हुवे जाव सात दिनके उगे-हुवे हो उनका एक एक वालाग्रका असख्याता २ खगडवा (टुकड़ा) करे, जो आंख मे घाले तो रड़के नहीं (मालुम पड़े नहीं) चक्षुइन्द्रीके अवघेणासे अनन्त गुणा छोटा सुक्ष्म पृथ्वीकायके शरीरसें अनन्त गुणा बड़ा, बादर पृथ्वी कायके शरीर जितना उन वालोसे उस कुवेको काठा तक भरे, पाच ओपमा करके सहित-चक्रवर्ती को सेना ऊपर होकर निकल जावे तो भी एक खगडवो मुचे (डीगे) नहीं, दावानल अग्नि लाग जावे तो एक खगडवो वले नहीं, पुष्करावर्त्त मेह वर्षे तो भी एक खगडवो भिजे नहीं, अनुकूल प्रतिकुल वायरो वाजे तो भी एक खगडवो उड़े नहीं, गगा सिधु नदीको पाट

नोट—"एक भरत इरवरतके मनुष्यके वालाग्रमें देवकुरु उत्तर कुरुके जुगलियोंके केस ४०८६ होते हैं"

उपर कर वेह जावे तो भी एक वाल वेवे नहीं, इस तरह की काठो कुवो भरे, सो सो वरसमें एक एक खरडवो निकाले, निर्लेपपणे सब कुवो (आखो कुवो) खाली हो जावे उसको एक पल्योपम कहिये।

सागरोपम किनको कहते हैं? दस क्रोडा-क्रोड कुवा खाली होजावे याने दस क्रोडा क्रोड पल्योपमका एक सागरोपम होता है। दश क्रोडा क्रोडी सागरोपम की एक अवसर्प्पिणी होती है, तथा दूसरा दश क्रोडा क्रोडी सागरोपमकी एक उत्सर्प्पिणी होती है। अवसर्प्पिणी और उत्सर्प्पिणी मिलकर एक कालचक्र होता है, ऐसे अनन्त कालचक्र बीतने पर एक पुद्गल परावर्त्तन होता है।

इति कालमाप समाप्तम्।

दोहा ॥ अक्षरपद हीणो अधिक, भूलचुक कहीं होय।
अरिहत आतम साखसे मिच्छामि दुक्कडं मोय ॥

शुभ भवतु

ॐ शान्ति। शान्ति ॥ शान्ति ॥।